ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 124-125**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

मोहन त्यागी का काव्य–जगत

राजवीर कौर
शोधअध्येता–हिन्दी विभाग ,पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) भारत

Received-17.04.2025, Revised-24.04.2025, Accepted-30.04.2025 E-mail : rajveerbhullar5252@gmail.com

सारांशः ***आधुनिक पंजाबी कविता के समकालीन दौर के प्रसिद्ध हस्ताक्षर मोहन त्यागी एक विलक्षण अनुभव एवं शैली वाले संवेदनशील कवि है। इन्होंने अपने पूर्ववर्तियों से भिन्न प्रकार की कविता रचकर समकालीन युग के काव्य–जगत में अपना विशेष स्थान स्थापित किया है। इनकी काव्य सृजन प्रक्रिया के सफर दौरान चार काव्य संग्रह धूएं दा दस्तावेज़ (2000), रूह का रेगिस्तान (2005), लहू दी विरासत (2010) और नज़्म दी आत्मकथा (2018) प्रकाशित हो चुके हैं। समाज में फैली अशांति और बेचैनी ने इनकी संवेदनाओं को अत्यंत प्रभावित किया। इन्होंने अपने जीवन में कठोर यथार्थ को सहन किया है जो इनकी लेखनी के माध्यम से परिलक्षित भी होता है। इसलिए वे स्वयं 'लहू दी विरासत' काव्य संग्रह की भूमिका में लिखते हैं कि ''इस संग्रह की सभी कविताएं आंतरिक और बाह्य परिवेश के संवाद से उभरती है। जब भी किसी घटना या परिस्थिति में मेरा खून खौलने लगता है तब मैं अपनी नब्ज़ से पूछ लेता हूं और कोरे पन्नों पर बूँद बूँद करके अपना खून उड़ेल देता हूं। जिसमें से कविता मेरी जुबान बोलती है। मेरे आस–पास मंड़ी का शोर जितना ज्यादा बढ़ता है, मेरे लहू भीतरी कविता भी उतने ही प्रबल रूप में सामने आती है।''1***

कुंजीभूत शब्द– काव्य–जगत, विलक्षण अनुभव, शैली, संवेदनशील कवि, काव्य सृजन प्रक्रिया, लहू दी विरासत, वैश्विकरण

आज के वैश्विकरण के युग में हमारे इर्द–गिर्द की दुनिया में बहुत सी नई घटनाएं घटित हो रही है। समकालीन पंजाबी कवि मोहन त्यागी ने वर्तमान में घट रही घटनाओं को अपनी चेतन बुद्धि से पकड़कर अपने काव्य में प्रस्तुत किया है। कवि के अपने शब्दों में, ''अगर मैं अपनी कविता के बारे में बात करूँ, तो यह सब मेरे आस–पास की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों की उपज है..... यह मेरे परिवेश के साथ एक जीवंत संवाद में पैदा होती है। इसमें कुछ भी काल्पनिक ढंग से प्रस्तुत नही किया गया।''[2] कवि के इन विशेष कथनों से यह स्पष्ट होता है कि मोहन त्यागी के काव्य के मूल सरोकार समसामयिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से जुड़े हुए हैं।

कवि मोहन त्यागी अपने काव्य–संग्रह 'धूएं दा दस्तावेज़' के माध्यम से पंजाबी साहित्य जगत में प्रवेश करते हैं। इनके काव्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह सिद्ध होता है कि इनके काव्य की पृष्ठभूमि में व्यक्तिगत संघर्ष और इनके पूर्वज़ों का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है। कवि के अपने शब्दों में, ''मेरे पूर्वज़ों का जीवन–संघर्ष ही मेरी कविता का मुख्य आधार है। मेरी सारी कविता इसी आधार पर बनी है और इसकी जड़ें भी इसी संघर्ष में निहित है। मेरे पूर्वज़ों के पदचिन्ह मेरी कविता में फैले हुए हैं।''[3] इस तरह मोहन त्यागी अपने जुझारू पूर्वज़ों के जीवन संघर्ष की गौरवशाली विरासत से अपना काव्य–विमर्श तैयार करते हैं।

कवि मोहन त्यागी के काव्य में मार्क्सवादी दर्शन के साथ–साथ उग्रवादी विचारधारा का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इन्हीं विचारधाराओं के अंतर्गत ही कवि सामाजिक क्रांति का स्वप्न देखते हैं। वस्तुतः इनका काव्य सामाजिक व्यवस्था के भीतर पनप रहे विद्रोह का प्रतीक है, जो मनुष्य को जीवन की कठिनाइयों के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रसंग को प्रस्तुत करती हुई, इनकी कविता 'विद्रोही रात' की कुछ पंक्तियां इस तरह हैः

''तुआढ़ी बागी रत्त इत्थैं दी
बदनाम धरत ते डुल्ले
ते तुआढे बागी होन दा भेद
इस कातल रात 'च खुल्ले
मैं चाहुंदा तुसीं अजे थोड़ा इल्ज़ार करे
अपने विद्रोह अते रोस दे शास्त्र
सीनिआं 'च छपाई रक्खो
ते मौका मिलदे ही औन्हा ते
करड़ा वार करो
मैं सच कैंहदा हां
मेरा इत्बार करो।''[4]

इस तरह इनके काव्य में क्रांतिकारी चेतना का एक अलग ही रंग हमारे सामने उभरकर आता है। विद्रोही चेतना कवि के तीव्र यथार्थ बोध से आधार प्राप्त करती है और समाज में संघर्ष कर रहे लोगों के पथ में आवाज़ उठाती है। इसी तरह के विचार इनकी ओर कविताएं जैसेः 'विरासत', 'मैं ते कविता', 'एक्क् खानाबदोष रात' और 'सियासत' आदि कविताओं में प्रस्तुत किए गए हैं।

कवि समाज के उस यथार्थ को भी उजागर करते हैं। जिसमें मानव से मानव होने का ही अधिकार छीन लिया गया। जिसमें वह ब्राह्मणवादी सोच और उन सिद्धांतों के बारे में बात करते हैं। जिनमें लोगों को जाति के आधार पर बाँटा जाता है। जिसके संबंध में मोहन त्यागी की कुछ पंक्तियां इस तरह से हैः–

''मनुं सारी मनुख्ता दा मुँह काला करके
कपटी हासा हँसिआ
ते असीं उसनूं ऋषिवर दी
पदवी दे के उसदे साजिशी
सिद्धांत नूं अंनिआ वांग पूजदे रहे।''[5]

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि मनु स्मिृति ग्रन्थ की मान्यताओं और सिद्धान्तों के यथार्थ रूप को हमारे समक्ष रखते हैं। वैश्विकरण के इस नवीन दौर में उदारीकरण, निजीकरण और खुले बाज़ार आदि नई व्यापारिक नीतियों ने पूरे विश्व को एक वैश्विक बाज़ार में बदल दिया है। बड़े–बड़े साम्राज्यवादी देशों द्वारा वैश्विकरण को मानवता के लिए कल्याणकारी बताया जा रहा है। लेकिन

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

मोहन त्यागी अपने काव्य में वैश्विकरण की वास्तविकता को उजागर करते हैं। इनके अनुसार इस व्यवस्था का एकमात्र उद्देश्य आम जनता को लूटकर बड़े पूंजीपतियों और कॉरपोरेट घरानों को लाभ पहुँचाना है। वैश्विकरण की इस नीति के कारण जहां पूंजीपतियों की पूंजी में भारी वृद्धि हुई है, वहीं निम्न किसान वर्ग, खेतिहर मजदूर गंभीर आर्थिक संकट में फंस गए हैं। डॉ. योगराज इनके काव्य–संग्रह पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि ''वैश्विकरण ने सांस्कृतिक क्षेत्र में सेलीब्रेशन के भ्रामक चित्र मानव के समक्ष प्रस्तुत किए हैं। वैश्विकरण की विकास परियोजनाओं का भारत के लोगों के लिए कोई मतलब नहीं है, जिन्हें दिन में तीन वक्त की रोटी के लिए भी संघर्ष करना पड़ रहा हो।''[6] इसी तरह वैश्विकरण की नीतियों पर व्यंग्य करते हुए मोहन त्यागी लिखते हैं:

''वैश्वीकरण
इक्क खौफनाक दैंत है
जो देहलियां उलंगदा है
साढ़े घरां वल्ल बद्धदा ही
औंदा है।''[7]

इस तरह कवि वैश्विकरण की आड़ में अंधकार द्वारा फैलाए जा रहे मकड़जाल को अपने काव्य में प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त कवि 'इशविहार', 'शहर', 'ब्रांड', 'कुढी ते चीता', 'बाज़ार' आदि कविताओं में वैश्विकरण अधीन बढ़ रही बाज़ारवाद की प्रक्रिया पर विशिष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

वैश्विक सरोकारों के साथ–साथ कवि ने दलित सरोकारों को भी बहुत शिद्दत से महसूस किया है। 'भंगी' कविता में इन्होंने सदियों से चली आ रही अमानवीय प्रथाओं के शिकार हुए दबे–कुचले लोगों की खमोश पीड़ा और विद्रोही भावना को आवाज़ दी है। जैसे:

''बड़ा ही तैश विच्च है अज्ज भंगी
जला देना चाहुंदा है ओह मुरदा
कानून
शाही फरमान।''[8]

कवि ने दलित, पिछड़ी श्रेणी, गरीब किसान वर्ग के दुःखद जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया है। कवि ने इनके पक्ष में आवाज़ उठाई है तथा गरीब के शोषण के लिए राजनीतिक ताकतों को जिम्मेदार ठहराया है। 'मेरे पानी', 'इक्क खानाबदोष रात' इसके उदाहरण हैं। डॉ. सरबजीत सिंह प्रमुख दलित कवियों में से मोहन त्यागी का नाम लेते हुए लिखते हैंरू– ''समकालीन पंजाबी कविता में दलित पहचान और चेतना से जुड़ी कविताएं संख्या और गुणवत्ता में प्रचुर है। वर्तमान समय के कवि ऐसे हैं जो न केवल सचेत रूप से बल्कि प्रतिबद्ध होकर कविता लिख रहे हैं, उनमें बलबीर माधोपुरी, मदनवीरा, गुरूमीत कल्लरमाजरी, जयपाल और मोहन त्यागी आदि प्रमुख हैं।''[9]

मोहन त्यागी के काव्य का एक प्रमुख सरोकार भारत में वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों की प्रस्तुति भी है। स्थापित राजनीतिक व्यवस्था में अन्याय, स्वार्थ और भाई–भतीजावाद व्याप्त है। राजनीति में नेता इतने स्वाथी और भ्रष्ट हो चुके हैं कि वह लोगों से वोट लेकर दुबारा उनको पूछते तक नहीं। कवि का कहना है कि राजनेता गिरगिट की तरह रंग बदलते हैः–

''सियासत जद अपना रंग विखौंदी है तां
चंगे–चंगे हसां नूं कां बना दिंदी है।''[10]

वर्तमान राजनीति में उच्च श्रेणी का ही दबाव बना हुआ है जिसको लेकर कवि अपनी 'हुकमनामा' कविता रचते हैं। इसके अतिरिक्त 'नाटशाला' और 'युद्ध और शांति' आदि कविताओं में कवि सत्ता की वर्तमान स्थिति से जागरूक कराते हैं। कवि मोहन त्यागी ग्रामीण जीवन के प्रति गहरे अहसास रखने वाले रचनाकार हैं। कवि गाँवों से शहरों की ओर पलायन करने की प्रक्रिया को अपनी कविता 'नई रुत्त' में प्रस्तुत करते हैं।

वस्तुतः मोहन त्यागी का काव्य संघर्षशील मनुष्य की वास्तविकताओं से, पीड़ा, उठने, लड़ने, हारने और फिर से उठकर लड़ने के शक्तिशाली दृश्यों की उपज है। इसी तरह संघर्ष कवि की काव्य दिशा का मूल आधार बन जाता है। कवि गरीबी, अपमान, सामाजिक उदासीनता में शिक्षा को आधार बनाकर एक नायक की तरह उभरे हैं। कवि समाज की बुराइयों का आनंद लेने की अपेक्षा उन्हें समझने और बदलने में अधिक रूचि रखते हैं। यही कारण है कि कवि को शब्दों को हथियारों की तरह चलाने की आदत है। जगल, रूह, रेगिस्तान, धुआं, खून, सूरज, अग्नि आदि प्रतीक चिन्ह इनके काव्य में हमेशा केंद्रीय रहे हैं। अतः मोहन त्यागी एक प्रगतिशील विचारधारा से जुड़े समकालीन रचनाकार है। जिनके हृदय में सम्पूर्ण समाज का दर्द समाहित है। समकालीन राजनीति के वास्तविक सत्य, दलित चेतना, नारीवादी चेतना, मानवतावादी रिश्तों की प्रस्तुति आदि जैसे सरोकार इनके काव्य में व्याप्त हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मोहन त्यागी, लहू दी विरासत, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 10.
2. मोहन त्यागी, नज़्म दी आत्मकथा, कैलीबर प्रकाशन, पटियाला, प्रथम संस्करण, 2018, (भूमिका)।
3. मोहन त्यागी, लहू दी विरासत, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 10.
4. मोहन त्यागी, धूएं दा दस्तावेज़, तर्कभारती प्रकाशन, बरनाला, द्वितीय संस्करण, 2014, पृ. 19.
5. वही, पृ.–71.
6. डॉ. योगराज, पंजाबी कवितारू उत्तर पंजाब संकट, चेतना प्रकाशन, लुधियाणा, 2012, पृ. 163.
7. मोहन त्यागी, रूह दा रेगिस्तान, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 18–19.
8. वही, पृ. 29.
9. सरबजीत सिंह, पाठ ते परिपेख, चेतना प्रकाशन, बरनाला, 2007, पृ. 49.
10. मोहन त्यागी, लहू दी विरासत, लोकगीत प्रकाशन, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण, 2010, पृ. 106.

*****